विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा मे शिक्षा की समस्या का एक अध्ययन : छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के विशेष सदर्भ में

अंजली यादव[1] एवं डॉ. एस. एल. गजपाल[2]

1. शोधार्थी: समाजषास्त्र एवं समाज कार्य अध्ययनशाला
2. एसोंसियट प्रोफेंसर एवं विभागाध्यक्ष समाजषास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला

पं. रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

Email- gajpal14@gmail.com

Abstract– प्रस्तूत शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के विषेष पिछड़ी जनजाति बैगा मे शिक्षा की समस्या पर आधारित है। अध्ययन कबीरधाम जिले के बोड़ला विकासखण्ड़ के 7 बैगा बाहुल्य ग्रामो पर केन्द्रित है। अध्ययन मे दैव निर्दषन के माध्यम से चयनित 277 बैगा परिवारो मे षिक्षा की समस्या को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन मे तथ्यो का संकलन हेतू साक्षात्कार अनुसूची उपकरण तथा मुख्य रूप से केन्द्रित साक्षात्कार तथा समूह साक्षात्कार प्रविधि के माध्यम से किया गया है। षोध अध्ययन से प्राप्त तथ्य यह दर्षाता है कि केन्द्र व राज्य सरकार के तमाम प्रयत्नों के बाद भी बैगा जनजाति मे शिक्षा की स्थिति चिंताजनक है । अध्ययन क्षेत्र मे षिक्षा से जुड़ी अनेक कार्यकमो के लागु होन के बाद भी बैगा लोगो मे व्याप्त उदासीनता तथा षिक्षण संस्थाओ मे मूलभूत सुविधाओं की कमी के कारण शैक्षणिक विकास की गति बेहद धीमी है।

महत्वपूर्ण शब्द : बैगा जनजाति , शिक्षा समस्या, जनसंख्या मे कमी

प्रस्तावना

आदिम जनजाति समूह बैगा जो कि भारत सरकार द्वारा घोषित 72 विलुप्त जनजातियो मे से एक है। भारत के संविधान मे अनुसूचित जनजातियो के षैक्षणिक और आर्थिक हित और सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार के षोषणों से उनकी रक्षा के लिए विषेष प्रावधान है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 366(25) अनुसूचित जनजातियो का संदर्भ उन समुदायो के रूप मे करता है।जिन्हें संविधान के अनुच्छेद 342 के अनुसार अनुसूचित किया गया है।जनजातिय षब्द का मूल अर्थ आदिवासी है और आदिवासी का अर्थ आदिम है। अर्थात प्राचीन समय से निवास करने वाली वासी/आदिवासी मूलतः निवास करने वाली जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है। इनका जीवन षैली आज भी वर्तमान समय मे भी प्राचीन पद्धतियों से ही संचालित होता आ रहा है। अब भले ही कुछ जनजातियों ने स्थायी ढंग से कृषि पषुपालन आदि कार्यो में रुचि लेना प्रारंभ कर दिया है, किंतु वर्तमान समय में बैगा जनजातिय षिकार करने, मछली पकडने ,लकडी काटने आदि कार्यो में संलग्न है। मध्यप्रदेष, महाराष्ट्र, उडीसा, गुजरात और झारखंड के बाद छ.ग. की जनजातियों की जनसंख्या के आधार पर 6 वें स्थान पर है। जबकि कुल जनसंख्या प्रतिषत के आधार पर मिजोरंम, नागालैंड, मेंघालय और अरुणाचल प्रदेष के बाद 5 वे स्थान पर है। 2011 के जनगणना के अनुसार छ.ग. राज्य में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 78, 22, 902 है। जों राज्य छत्तीसगढ की एक तिहाई है। प्रदेष की कुल जनसंख्या का लगभग एक तिहाई 30.64 प्रतिषत अनुसूचित जनजातियों की है। जबकि 2001 में 31.8 प्रतिषत अनुसूचित जनजातिय जनसंख्या रही थी। इससे स्पष्ट है कि गत दस वर्षो में अनुसूचित जनजातिय जनसंख्या में कमी आई है।

शोध अध्ययनो की समीक्षा –

बैगा जनजाति की उत्पत्ति को लेकर को कोई साक्ष्य नहीं है। अंग्रेजो के षासन काल से ही बैगा जनजाति पर षोध कार्य प्रारम्भ हो गया था। स्वतंन्त्रता पूर्व एंव स्वतंन्त्रता पष्चात् अनेक षोध कार्य हो रहे है किन्तु वर्तमान समय मे भी बैगा जनजाति की स्थिति मे कुछ विषेष परिवर्तन नही आये है ।

रसेल हीरालाल (1916) – सर्वप्रथम मध्यप्रदेष की जनजातियो का कमबद्ध विवरण चार खंड़ो मे प्रकाषित "कस्टम एंड ट्राइब्स इन सेंट्रल प्रोविसेंज" नामक पुस्तक मे किया है इसके पष्चात् हुए मध्यप्रदेष की जनजातियों पर हुए उपयोग अध्ययनों का पुनरावलोकन प्रस्तूत किया है।"[1]

वेरियर एल्विन (1939) 'द बैगा मे बैगा जनजाति के बारे मे विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।इस पुस्तक मे बैगा जनजाति के जीवन से संबंधित प्रत्येक पहुलओ पर प्रकाष डाला गया है इसके अनुसार बैगा जनजाति आदिम जनजाति है और यह जनजाति एकांत जीवन निर्वाह करना पसंद करती है।सर्वप्रथम "वेरियर ऐल्विन 1939 मे बैगाओ के जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रकाष डाला जिसमे स्वास्थ्य गत स्थिति भी षामिल है उन्होने बताया कि भारतीय समाज विभिन्न प्रजातीय समूहों का संगम स्थल रहा है।"[2]

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
P. G. COLLEGE, KORBA (C. G.)

GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA